साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 6, अंक : 22 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 20 जनवरी से 26 जनवरी 2021 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

प्लास्टिक कचरे का निस्तारण

सरकार के ड्राफ्ट पर उठते सवाल

अगर हम ये कहें कि प्लास्टिक कचरा को लेकर केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के यूनिफॉर्म फ्रेमवर्क ऑफ एक्सटेंडेड प्रॉड्यूसर्स रेस्पांसिब्लिटी में कोई चूक नहीं है, तो निसंदेह ये सच्चाई पर परदा डालने वाला बयान होगा।

हालांकि सरकार ने इसका प्रारूप इसी साल जून में कोविड-19 महामारी के बीच सार्वजनिक किया था, लेकिन इसमें कोविड-19 को लेकर अस्पष्टता है, क्योंकि इसमें वर्तमान चुनौतियों को शामिल नहीं किया गया है।

इस ड्राफ्ट में इस्तेमाल हो चुके पर्सनल प्रोटेक्टिव इक्विपमेंट (पीपीई) और घरों से निकलने वाला मिश्रित कूड़ा, खतरनाक बायोवेस्ट जैसे मास्क, दस्ताना व साफ-सफाई से जुड़ी अन्य चीजें उठाने वालों की परेशानी पर कोई चर्चा नहीं है।

ये खतरनाक कचरा कूड़ा उठाने वालों को भी संक्रमित कर सकती हैं, जिससे वे गंभीर रूप से बीमार पड़ सकते हैं। उनका मेडिकल खर्च बढ़ सकता है और चरम स्थिति में उनकी मौत हो सकती है। अधिकांश देशों में जोखिम वाले पेशों से जुड़े कामगारों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम चलाये जाते हैं, जिनके तहत स्वास्थ्य बीमा और जरूरी सुरक्षात्मक उपकरण मुहैया कराये जाते हैं। जबकि भारत में कूड़ा उठाने वाले कामगारों को नगर निकायों या ठेकेदारों की तरफ से किसी तरह का पीपीआई नहीं दिया जाता है। कई कामगारों को पिछले कई महीनों से तनख्वाह ही नहीं मिली है। चूंकि उनके

लिए किसी तरह की शिकायत निवारण प्रणाली उपलब्ध नहीं है, इसलिए वे इस डर से काम जारी रखे हुए हैं कि कहीं उनका पिछले काम का पैसा भी डूब न जाए। और तो और, लॉकडाउन अवधि के दौरान कूड़ा निस्तारण से जुड़े डीलरों की दुकानें बंद रहीं क्योंकि उनका काम जरूरी सेवाओं के अंतर्गत नहीं आता है। इस वजह से क्रियान्वयन प्रक्रिया ठप पड़ गई, क्योंकि कूड़ा उठाने वाले रिसाइकल होने वाले कूड़े को बेच नहीं सके। प्रारुप दस्तावेज में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा ईपीआर तंत्र की निगरानी लागू करने के लिए वेब पोर्टल का प्रस्ताव दिया गया है। पोर्टल अनुमानत: देशभर साझेदारों के लिए एकल रजिस्ट्रेशन प्वाइंट होगा, जहां कूड़ा प्रबंधन से जुड़े साझेदार-संग्रहकर्ता, संयोजनकर्ता और रिसाइकिल करने वाले पंजीयन करा सकते हैं। लेकिन, ड्राफ्ट आसानी से इस सच की अनदेखी कर देता है कि कूड़ा संग्रह और इसकी रिसाइक्लिंग असंगठित क्षेत्र द्वारा किया जाता है। अत: सवाल ये उठता है कि असंगठित क्षेत्र से सरकार कैसे ये उम्मीद करती है कि वे ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीयन करा लेंगे? असंगठित क्षेत्र में कामकाज नकद होता है। नकद के लिए कचरे का व्यापार होता है और वैल्यू चेन से जुडा हर व्यक्ति हर खरीद-बिक्री में कुछ फायदा कमाता है। कूड़ा संग्रह करने वाले इस वैल्यू चेन पिरामिड में सबसे नीचे हैं। कूड़ा उठाने वाले रोजाना के हिसाब से डीलरों को कूड़ा बेचते हैं और इसकी कीमत बाजार के अपने नियम से संलाचित होती है न कि किसी आधिकारिक नियामक से। कूड़ा डीलर कुछ कीमत चढ़ाकर कूड़ा एक बड़े डीलर को बेच देता है और ये चक्र आगे बढ़ता है।

कूड़े पर कमाई उसकी मात्रा के आधार पर होती है। छोटी कॉलोनी, नगर निगम वार्ड, शहर, राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कितना कूड़ा निकलता है, इसको लेकर कोई विश्वस्त आंकड़ा उपलब्ध नहीं है, पर ये नकद आधारित बिजनेस मॉडल पिरामिड के ऊपरी हिस्से में बेहतर तरीके से काम करता है।

इतना ही नहीं, कूड़े के असेंबलर या डीलर शहर में इधर-उधर बिखरे हुए हैं, इसलिए उनकी शिनाख्त कर पाना मुश्किल है। ये कारोबार उन लोगों द्वारा किया जा रहा है, जो बहुत पढ़े लिखे नहीं हैं और वे लम्बे समय से ये काम कर रहे हैं या उन्हें विरासत में मिला है। क्या ऐसी कंपनी या बिजनेस ऑनलाइन पोर्टल में अपना पंजीयन कराना चाहेंगी? खासकर कोविड-19 के समय में जब रिसाइकल करने योग्य कूड़े से संक्रमण का बड़ा खतरा है। इसे देखते हुए कूड़ा-करकट के डीलर घरों से निकलने वाला कचरा लेना पसंद नहीं कर रहे हैं बल्कि दफ्तरों व अन्य व्यावसायिक कार्यालयों से निकलने वाले कूड़े के प्रबंधन की कोशिश कर रहे हैं। वजह ये है कि इन दफ्तरों से कचरे के रूप में मुख्य रूप से कागज और गत्ता निकलता है, जिसे 72 घंटों तक आराम से रखा जा सकता है। इसे रखने के लिए ज्यादा जगह की जरूरत भी नहीं पड़ती, क्योंकि इन्हें दबाकर आसानी से स्टोर कर रखा जा सकता है। ड्राफ्ट दस्तावेज कूड़े के संग्रहण और उसे अलग करने की पूरी जिम्मेवारी निकायों पर डालता है। लेकिन, निकायों पर जिम्मेवारी भी बहुत कारगर नहीं हो सका है। इसका कारण ये है कि एक बार सभी तरह का कचरा एक में मिल जाता है, तो उन्हें अलग करना व्यावहारिक नहीं होता और आखिर में कूड़ा लैंडफिल में जगह पाता है।

कूड़े के बेहतर प्रबंधन के लिए स्रोत स्थल यानी जहां से कूड़ा का उठाव होता है, वहां ही इसे अलग किया जाना जरूरी है।

कोविड-19 संकट को देखते हुए संक्रमण के फैलाव को रोकने के लिए स्रोत स्थल पर ही कचरे को अलग करना अहम हो जाता है। खासकर होम क्वारंटीन के मामलों में तो ये और भी जरूरी होता है।

हालांकि, स्रोतस्थल पर कूड़े को अलग करने के लिए समय, शिक्षा और प्रोत्साहन की जरूरत पड़ती है। मिसाल के तौर पर कोविड-19 से पहले पुणे के पिम्परी-चिंचवड़ म्युनिसिपल कॉरपोरेशन में कूड़े को स्रोत स्थल पर ही अलग करने और जैविक व पुन:चक्रित (रिसाइकिल) होने लायक कूड़े के आंतरिक प्रबंधन के लिए बड़े आवासीय सोसाइटीज को प्रॉपर्टी टैक्स में छूट की स्कीम थी। लेकिन, कोविड-19 के कारण ये स्कीम रोक दी गई है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता

पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी ने पिछले तीन-चार दशकों के दौरान तीव्र विकास किया है। आज के समय में मनुष्य के अंदर आधुनिकरण एवं विकास की लालसा की वजह से पर्यावरण पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। प्रदूषण से लेकर ओजोन डिप्लिशन तक हो या फि र भूमिगत जल संदूषण से लेकर ग्लोबल वॉर्मिंग हो, सभी मनुष्य के द्वारा किया जा रहा है। चारों ओर से पर्यावरण संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती दिखाई दे रही है। अतः इन सभी समस्याओं का समाधान होना अतिआवश्यक है।

पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी इन्हीं समस्याओं को मद्देनजर रखते हुए जैव प्रौद्योगिकी प्रमुख शाखा बनती जा रही है।

पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी ने न सिर्फ अपशिष्ट जल में जहरीली धातुओं और खतरनाक अपशिष्ट को खत्म करके दिखाया है, बल्कि सूक्ष्म जीवों की जैव-रासायनिक की संभावना को बढ़ा दिया है, जिससे हम अपने पर्यावरण के पक्ष में प्रयोग कर सकते हैं। पेड़-पौधे, जीव-जन्तु का प्रयोग कर हम योग्य विलक्षणता से बना सकते हैं, जो कि पर्यावरण के सतत पोषणीय विकास के लिए अत्यंत लाभकारी है।

जैवोपचारण यानि कि जैव कारकों का प्रयोग कर पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करवाना भी पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी का एक अच्छा उदाहरण है।

पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल सिर्फ वातावरण को स्वच्छ रखने में ही नहीं, अपितु कई घटकों पर भी कर सकते हैं। हरा ईंधन (ग्रीन फ्युल) बनाने की तकनीक का इजात हुआ है, जो कि इसके अंतर्गत ही आता है।

राजस्थान में रतनजोत के पौधों का अधिक मात्रा में प्रयोग कर हरा ईंधन बनाया जा रहा है। इस तकनीक के जरिए हमारी निर्भरता प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले ईंधन जैसे - कोयला, पेट्रोल आदि पर कम हो गई है।

पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी की ही दो शाखाएं हैं - 1। विष ज्ञान (टोक्सिकोलॉजी) 2। जैव रसायन (बायोकेमेस्ट्री)। इन दोनों क्षेत्रों का प्रयोग हम अपने पर्यावरण को संरक्षित करने में कर सकते हैं।

डॉ. बी लाल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटेकनोलॉजी भी पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अच्छा योगदान दे रहा है।

यहां पर्यावरणीय जैव प्रौद्योगिकी से संबंधित पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं व इस पर छात्रों को प्रशिक्षण भी दे रहे हैं, जिससे आज के युवा भी अपने पर्यावरण के प्रति सचेत रहे व पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सके।

समझे धरती मां का दर्द

एक मां, पत्नी, बहू या बहन होने के नाते आप घर की धुरी हैं। सबके जीवन व आदतों को आपका व्यक्तित्व प्रभावित करता है। इसीलिए आप द्वारा अपनाए गए नियम घर के अन्य सदस्यों के लिए भी अनिवार्य हो जाते हैं। आइए जानें कैसे आप धरती मां की सहायता कर सकती हैं। इन्हें अपनी व अपने परिवार की आदत बनाकर आप मना सकती हैं हर दिन अर्थ डे...।

पानी की बचत

पानी की बचत हर संभव तरीके से करें, कहती हैं एक बैंक में कार्यरत सीमा भाटिया। वह कहती हैं कि कपड़े या बर्तन धोते समय नल खुला न छोड़ें। बाल्टी में पानी लेकर कपड़े धोएं और बचे हुए पानी को फ्लश में डालने के लिए प्रयोग कर सकती हैं। यदि साफ पानी बचे तो पौधों में डाल दें, लेकिन ध्यान रहे कि डिटर्जेंट वाला पानी पौधों व धरती के लिए हानिकारक हो सकता है। सब्जियों को किसी बरतन में पानी लेकर धोएं तथा बाद में वह पानी पौधों में डालें।

ग्रीन कंज्यूमर बनें

पर्यावरण के लिए सुरक्षित वस्तुएं खरीदें यानी वे वस्तुएं जिन्हें बनाने या जिनके इस्तेमाल से पर्यावरण को किसी तरह की हानि न हुई हो। साथ ही उनकी पैकिंग में प्लास्टिक और एल्यूमिनियम का इस्तेमाल कम से कम किया गया हो या वह सामान रीसाइकल्ड वस्तुओं से तैयार किया गया हो, कहती हैं एमबीए की छात्रा मधुमिता शर्मा। वह कहती हैं कि जरूरी है कि हम तीन आर का ध्यान रखें यानी जहां तक हो सके री-यूज, री-साइकल तथा रि-ड्यूस का नियम अपनाएं और घर के अन्य सदस्यों को भी इसके लिए प्रेरित करें यानी वही सामान इस्तेमाल करें जिसे री-साइकल या पुन- इस्तेमाल किया जा सकता हो। डिसपोजेबल वस्तुओं के इस्तेमाल से बचें। उदाहरण के लिए डिस्पोजेबल रेजर के स्थान पर मशीन रेजर, पेपर नैपकिन के स्थान पर कपड़े से बने नैपकिन, रोटी लपेटने के लिए एल्यूमीनियम फॉइल के स्थान पर कपड़े का नैपकिन इस्तेमाल कर सकते हैं।

प्लास्टिक का प्रयोग न करें

होममेकर निधि शुक्ला का कहना है कि प्लास्टिक धरती मां की दुश्मन है। प्लास्टिक का कचरा पृथ्वी से पूरी तरह मिटाने के लिए सैकड़ों साल का समय लग सकता है। इसलिए किसी भी तरह के प्लास्टिक के सामान का त्याग करें। मैं बाजार से सामान लाने के लिए प्लास्टिक बैग की जगह कागज के लिफाफे या कपड़े के थैले का प्रयोग करती हूं। वह कहती हैं कि प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल भी कम करें। ऐसी वस्तुएं खरीदें जिनकी पैकिंग में प्लास्टिक का इस्तेमाल कम हो यानी वे कम कचरा उत्पन्न करें। जब भी शॉपिंग करने निकलें, अपना थैला साथ लेकर जाएं। इससे फालतू प्लास्टिक बैग घर में नहीं आएंगे। जब भी कोई दुकानदार प्लास्टिक बैग देने लगे तो स्वेच्छा से उसे लेने से इंकार करें।

एक मां का दर्द एक मां से बेहतर और कौन समझ सकता है। आज फैक्ट्रियों, कीटनाशकों आदि के रसायनों, प्लास्टिक के प्रदूषण से धरती मां का सांस लेना दूभर हो रहा है।

ईको फ्रेंडली वॉशिंग

एक स्कूल में पढ़ाने वाली पूर्वा कोहली कहती हैं कि मैं मोटे कपड़े धोने के लिए भी हमेशा ठंडे पानी का ही इस्तेमाल करती हूं। इससे बिजली का बिल कम आता है। इसी प्रकार अधिक रासायनिक डिटर्जेंट के स्थान पर मैं नार्मल डिटर्जेंट का प्रयोग करती हूं। ये हमारी वॉशिंग को ईको फ्रेंडली बनाते हैं। वह कहती हैं कि आजकल वॉशिंग मशीनों के नए मॉडल 30 से 60 प्रतिशत तक पानी की बचत में सहायक हैं और ईको फ्रेंडली वॉशिंग में भी।

गो ग्रीन

हरियाली हवा को साफ करती है। इसलिए अपने घर व आसपास अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाएं व उनकी देखभाल करें। इससे आपको स्वच्छ वातावरण तो मिलेगा ही। साथ ही मानसिक शांति व सुकून भी। यह कहना है पर्यावरण के लिए काम करने वाले एक एनजीओ से जुड़ी राधा अग्रवाल का। वह कहती हैं कि घर के अंदर रखे पौधे भी ठंडक प्रदान करते हैं। इसलिए घर के अंदर भी पौधे अवश्य लगाएं। घर से निकलने वाले कूड़े में कई वस्तुओं का प्रबंधन करके आप इन पौधों के लिए खाद भी तैयार कर सकती हैं, जैसे सब्जियों व फलों के छिलकों को कम्पोस्ट बनाकर खाद की तरह इस्तेमाल करें।

करें बिजली की बचत

पर्यावरण पर रिसर्च कर चुकी एजुकेशनिस्ट डॉ. शालिनी गुप्ता का कहना है कि समाज की सबसे छोटी ईकाई यानी परिवार से बदलाव की बयार चले तो समाज में तेजी से परिवर्तन संभव है। इसके लिए बिजली की बचत की बात करें तो घरों में एलईडी लाइट्स लगाकर बिजली के बिल में कटौती के साथ ही जो ऊर्जा की बचत होती है उससे बिजली के कट्स में भी कमी आएगी। नतीजतन जनरेटर कम चलेंगे। इनके कम चलने से वायु प्रदूषण घटेगा। इसके अलावा बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों आदि का निर्माण ही ग्रीन बिल्डिंग्स के तौर पर हो, जिनमें रेन वाटर हारवेस्टिंग के अलावा सोलर पैनल लगा कर अक्षय ऊर्जा का उपयोग हो तो हम काफी ऊर्जा बचा सकते हैं। अधिक बिजली के उपकरणों के इस्तेमाल का मतलब है अधिक ग्लोबल वॉर्मिंग। इसलिए जितनी आवश्यकता हो उतनी ही बिजली इस्तेमाल करें।

ट्यूबलाइट्स साफ रखें, इससे वे अधिक रोशनी देंगी। जब भी अवसर मिले परिवार के सभी सदस्य साथ बैठकर गपशप करें। इससे अलग-अलग कमरों के एसी, पंखें, कूलर व लाइटें नहीं जलेंगी। इससे भी बिजली की बचत होगी। मैंने मुंबई से अर्थशास्त्र में स्नातक करने के बाद आर्ट्स ऐंड क्रॉफ्ट्स का कोर्स किया। कुछ समय टीचिंग की। साथ ही और भी काम किए। फिर भी अधूरापन लग रहा था। इसलिए जॉब छोड़ दी। कुछ क्रिएटिव करने का दिल हो रहा था। मैंने अपने आसपास के टेलर्स से कॉन्टैक्ट किया, जिनके पास रोजाना काफी वेस्ट मैटीरियल निकलता था।

मध्यप्रदेश का स्वर्ग, 180 करोड़ वर्ष पुराने सौंदर्य को जो देखे देखता ही रह जाए

जबलपुर।
स्वर्ग यह एक ऐसा शब्द है जिसे सुनने मात्र से आंतरिक अनुभूति वहां जाने की होने लगती है। जन्नत के मायने भी अब अलग-अलग हैं। जिस स्थान पर व्यक्ति आनंद से आहलादित हो उठे अर्थात सिर्फ दुनिया को सुखद महसूस करे उस स्थान को भी स्वर्ग की संज्ञा दी गई है। उन्हीं में से एक है संस्कारधानी का धुआंधार-भेड़ाघाट। 180 करोड़ वर्ष पुरानी इस धरोहर को एमपी का स्वर्ग भी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह ऐसा स्थान है जो हर आने वाला पर्यटक सौंदर्य को याने की स्वर्ग रूप माहौल को निहारता रह जाता है। कुछ पलों के लिए वह सब भूल जाता है और सिर्फ प्रकृति के इस अनुपम नजारे में खो जाता है।

यह है स्थान का इतिहास- जन-जन को अपनी बूंदों से प्यास बुझाने के साथ पवित्र और पुण्य प्रदान करने वाली मां नर्मदा का तट बड़े-बड़े रहस्यों को अपनी गोद में संजोए हुए है। उन्हीं में से है भेड़ाघाट-धुआंधार। जानकारों की मानें तो इस स्थान का इतिहास लगभग 180 करोड़ वर्ष पुराना है। मां नर्मदा का बावनगंगा के साथ मिलन स्थान का नाम भेड़ाघाट हुआ। यह स्थान पर्यटन की दृष्टि के साथ-साथ धार्मिक महत्व भी रखता है। समीप ही गुप्तेतर काल का शक्ति मंदिर जो सप्तघृत मातृका व वर्तमान में चौसठ योगिनी का प्रसिद्ध मंदिर खास है। 10वीं सदी में मंदिर का और भी विस्तार हुआ। मां नर्मदा सहित तटों की असीम सुंदरता का धर्मग्रंथों में वर्णन भी इसका प्रमाण है।

पर्यटन की दृष्टि से भी है खास- धुआंधार-भेड़ाघाट पर्यटन की दृष्टि से भी अहम है। ऊंचाई से गिरती जल की दूधिया धार और पानी से निकलने वाला धुएं सा नजारा हर पर्यटक को सम्मोहित कर लेता है। आजादी से पहले भी विदेशी पर्यटक कैप्टन जे फोरसाइथ ने अपनी पुस्तक हाइलैंड्स ऑफ सेंट्रल इंडिया मध्य भारत की आकृतियों और प्राकृतिक सुंदरता के बारे में बहुत कुछ लिखा है। भेड़ाघाट की खूबसूरत चट्टानों की बात का जिक्र है।

उद्गम से समागम में यह स्थान विशेष- उद्गम स्थान से लेकर समागम तक मां नर्मदा के सौंदर्य व रहस्य अगाध है। लेकिन जबलपुर का यह स्थान विशेष है। प्रकृति का अनोखा सौंदर्य, नदी की अठखेलियां और अनोखा सौंदर्य यहीं देखने मिलता है। तभी तो देश ही नहीं बल्कि विदेश से प्रतिदिन सैकड़ों पर्यटक खिचे चले आते हैं। श्वेत सहित विविध रंग की चट्टानों में सौंदर्य देखते मन नहीं अघाता। भृगु ऋषि का स्थान होने के कारण भी इस स्थान को भेड़ाघाट के नाम से जाना जाता है। ग्वारीघाट, तिलवाराघाट, लमेहटाघाट, गोपालपुर, चौंसठ योगिनी मंदिर और पंचवटीघाट जैसे सौंदर्य भी बड़े दार्शनिक हैं।

इस समय बढ़ जाता है रोमांच- नर्मदा के संगमरमरी घाटों और तटों पर पर्यटकों का दिल रोमांच से चार-चौगुना उस समय हो जाता है जब दीपक की लौ जलधारा में टिमटिमाती है। नाविक हलोर मारती धार पर एक दूसरे से काटते हुए पर्यटकों को आनंदित करते हैं। यह नजारा देखकर ऐसा लगता है मानो यही स्वर्ग है। तटों पर मंदिर भी पर्यटकों को खूब लुभाते हैं। भेड़ाघाट का वातावरण भी बेहद शांत रहता है। जब सूरज की रोशनी सफेद और मटमैले रंग के संगमरमर चट्टान पर पड़ती है, तो नदी में बनने वाला इसका प्रतिबिंब अद्भुत होता है। भेड़ाघाट और यहां की संगमरमर चट्टान की खूबसूतरी उस समय चरम पर होती है जब चांद की रोशनी चट्टान और नदी पर एक साथ पड़ती है। इस माहौल में बोट राइड का अनुभव भी जीवंत हो जाता है।

कचरे के ढेर में तब्दील होती धरती

आज से क़रीब 50 हज़ार साल पहले इंसानों के दिमाग़ में आज वाले बर्ताव के बदलाव आए. इसके बाद आदि मानव अफ़्रीका से निकल कर पूरी दुनिया में फैल गया. मानव जाति के इस विस्तार और बढ़ती आबादी ने धरती की आबो-हवा से लेकर भौगोलिक रूप पर गहरा असर डाला है. इंसानों ने धरती को कभी न भर पाने वाले घाव दिए हैं. कनाडा के फ़ोटोग्राफर एडवर्ड बर्टिंस्की औद्योगिक क्रांति के असर को दिखाने वाली तस्वीरें खींचने के उस्ताद हैं. उनकी तस्वीरें जो कभी हेलिकॉप्टर तो कभी सैटलाइट से ली गई हैं. वो हमें धरती पर ही एक ऐसी दुनिया होने का अहसास कराती हैं, जो शायद हैं ही नहीं। उत्खनन, जंगलों की सफ़ाई, औद्योगिक कचरे और क़तरा-क़तरा गल रही चीज़ों की ऐसी तस्वीरें एडवर्ड बर्टिंस्की ने खींचीं हैं कि कुछ को देखने पर तो दूसरी दुनिया का एहसास होता है। उनकी तस्वीरों में कचरे के पहाड़ हैं. प्लास्टिक के ढेर हैं. रबर के जंगल हैं और बंद हो चुके कारखानों और खदानों की झांकी दिखती है. कुल मिलाकर इंसान की गतिविधियों से धरती पर जो सड़न फैल गई है, एडवर्ड बर्टिंस्की ने उसे सबसे बढ़िया तरीक़े से अपनी तस्वीरों में क़ैद किया है। ये धरती के उस युग की दास्तान है, जो इंसानों के राज का है। बर्टिंस्की कहते हैं, कचरे के ढेर के बगल से निकलते हुए ज़्यादातर लोगों को उसमें कोई तस्वीर नहीं नज़र आती. मगर, हर क़दम पर एक तस्वीर है. आप को बस वहां पर जा कर उसे तलाशना है। एडवर्ड बर्टिंस्की की बेहद मशहूर फ़ोटो में से एक है, अमरीका के कैलिफ़ोर्निया में लगा बेकार पड़े टायरों का ढेर. एक और तस्वीर में उन्होंने शिकार किए गए हाथी दांत को जलाते हुए क़ैद किया है। वहीं खनिजों की खुदाई से चट्टानों को मिले घावों की तस्वीरें अलग ही दास्तां बयां करती हैं. जैसे चिली की चुक़ीकामटा खदान की तस्वीर, जो दुनिया की सबसे बड़ी तांबे की खुली खदान है। नोबेल पुरस्कार विजेता, जोज़ेफ़ क्रटज़ेन ने इंसानों के धरती पर राज के इस दौर को एंथ्रोपोसीन युग का नाम दिया था. ये वो भौगोलिक दौर है, जब इंसान धरती के सर्वेसर्वा बन गए। हाल ही में एंथ्रोपोसीन युग के एक नए मल्टीमीडिया प्रोजेक्ट के लिए पिछले पांच सालों में 20 देशों में जाकर इंसान के क़ुदरत को दिए जख़्मों की ऐसी ही तस्वीरें खींची हैं। एडवर्ड बर्टिंस्की कहते हैं, हम एक बड़ी क़यामत के मुजरिम बनने के मुहाने पर खड़े हैं। इसकी मिसाल अमरीका के फ्लोरिडा में फॉस्फोरस निकालने के लिए बनाए गए तालाबों की तस्वीर से मिलती है. प्रदूषण की वजह से ये फॉस्फोरस दोबारा उस तालाब में नहीं जा पाता. एडवर्ड बर्टिंस्की ने 2016 में अपनी एक फ़ेसबुक पोस्ट में सवाल पूछा था, मुझे बताइए कि आख़िरी बार आप ने कब फॉस्फोरस का जिक्र किया या सुना था?

शुद्ध हवा के लिए घर के बाहर 4 पौधे, जरुर लगाएं, बीमारी भी दूर भागेगी!

पौधे हमारे लिए कितने आवश्यक हैं यह तो लगभग हर कोई जानता है. वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बनाए रखने के साथ ही प्रकृति के ये कीमती उपहार और भी कई मायनों में साबित हो सकते हैं हमारे मददगार. घर में लगे ये पौधे घर की सुंदरता को तो बढ़ाते ही हैं. साथ ही कई मायनों में लाभकारी साबित होते हैं।

घर में सकारात्मक ऊर्जा लाने, शोभा बढ़ाने के साथ ही नेचुरल एयरप्यूरिफायर ये पौधे अच्छी नींद लाने में भी होते हैं काफी सहायक. हालांकि मिथ यह भी है कि घर के अंदर रखे पौधे रात में कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन करने लगते हैं. फिर भी प्रकृति में कुछ ऐसे पौधे भी हैं जो आपके आसपास शुद्ध वातावरण बनाए रखने की जिम्मेदारी बखूबी निभाते हैं वह भी दिन-रात...

चमेली- बालों को सजाना हो तो चमेली की खूबसूरती का जवाब नहीं, मगर खूबसूरती बढ़ाने वाला यह आकर्षक और खुशबूदार चमेली का पौधा आपके तनाव और बेचैनी को कम करके आपको बेहतरीन नींद भी देता है. साथ ही देता है सकारात्मक ऊर्जा की सौगात।

लैवेंडर- लैवेंडर आयल के फायदों के बारे में तो आपने सुना ही होगा. इसके पौधे को घर में लगाने के और भी कई फायदे हैं. यह वातावरण के साथ-साथ आपके मूड को भी सकारात्मक बनाए रखता है. इसके अलावा यह बेचैनी और तनाव को भी कम करता है. साथ ही बेहतर और आरामदायक नींद लेने में मदद करता है. वैज्ञानिकों का कहना है कि लैवेंडर के पौधे को घर में रखने से छोटे बच्चों को मिलती है गहरी नींद और इसकी अरोमा थेरेपी कर देती है नई मांओं को तनाव से कोसों दूर।

एलोवेरा- त्वचा संबंधी कोई भी सौंदर्य उत्पाद हो उसमें एलोवेरा का इस्तेमाल न हो यह हो ही नहीं सकता. त्वचा को सुंदर बनाने के साथ ही यह पौधा देता है आपको अच्छी नींद का तोहफा भी. छोटे-मोटी खरोंच और जलन में मददगार एलोवेरा रात को ऑक्सीजन छोड़ता है, जिससे नींद न आने की परेशानी दूर हो जाती है. इसके रस का सेवन स्वास्थ्य के लिए भी है लाभकारी।

स्पाइडर प्लांट- इस पौधे को इसकी बिखरी हुई पत्तियों से पहचाना जा सकता है. स्पाइडर प्लांट कैंसर का खतरा उत्पन्न करने वाले केमिकल्स से वातावरण को शुद्ध करता है. इसके साथ ही वातावरण की दुर्गंध को सोखकर आपके लिए नींद का आनंदमय वातावरण भी कर देता है तैयार।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008